8

समरस्य-श्लोक-संग्रह

हम हमारे जीवन में अलग-अलग प्रकार के लोगों से मिलते हैं। हम उनसे विभिन्न चीजों को लेकर अलग भी हो सकते हैं परंतु तब भी हम में आपस में कुछ समानताएं भी होती हैं जो हमें एक जैसा बनाती हैं। जैसे समाज के लिए सामान्य उद्देश्य, आन्तरिक मूल्य और उन उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु सही पथ। हमारे प्राचीन ग्रंथ ऐसे ही ग्रंथ है जो मानवता के प्रति हमें सही राह दिखाते हैं।

इस पाठ में हम भगवद्गीता के कुछ ऐसे ही श्लोकों का मनोरम कहानियों के माध्यम से अध्ययन करेंगे।

उद्देश्य

यह पाठ पढ़ने के बाद आप सक्षम होंगे-

- समरस्य-श्लोक-संग्रह के 18 श्लोकों का उच्चारण कर पाने में; और
- एक उद्देश्य की प्राप्ति हेतु अनेक पदों के विषय में जान पाने में।

8.1 चार गाबों की कहानी

एक बड़ी पर्वतमाला थी। उस पर्वतमाला के चारों और चार गांव थे। जिनका नाम था-रामपुरा, भरतपुरा, लवपुरा और कुशपुरा। ये चारों गांव आपस में जुड़े हुए नहीं थे। गांव के लोग भी एक दूसरे को नहीं जानते थे।

उन गांवों के लोग अक्सर उस पर्वत की तरफ देखा करते थे। उन्हें एक बड़ा सफेद ध्वज दिखाई देता था। वे सोचते थे कि यह उनके गांव का प्रतिनिधत्व करता है और जरूर यह गांव वालों के लिए कोई संदेश है। संयोगवश एक दिन चारों गावों के एक-एक कर चार युवा लड़के उसके पास पहुंच कर उस ध्वज के बारे में जानने के लिए उसके पास जाना चाहते थे। हालांकि ये इन सबको आपस में यह पता नहीं था कि उसने गांव के अलावा दूसरे गांव के युवा भी यही सोच रहे है। उस चोटी तक पहुँचने में उन्हें काफी रास्ता तय करना था इसलिए उन्होंने दोपहर का खाना साथ में लिया और उस पहाड़ पर चढ़ने लगे। कुछ समय बाद वे उस पहाड़ की चोटी पर पहुँच गये और ध्वज से थोडी ही दूरी पर थे। वे बहुत थक चुके थे इसलिए उन्होंने दोपहर का खाना खाया और आराम करने लगे। संयोग ही था कि वे चारों के चारों युवा एक जगह पर टकराये। तथा उन्होंने आपस में एक दूसरे से यहां आने का कारण पूछा। यह भी कौतूहल का विषय था कि चारों का वहां आने का कारण उस सफेद ध्वज के विषय में जानना था। जैसे ही वे चारों गावों के युवा लड़के उस ध्वज के पास पहुँचे उन्होंने चारों गावों के लिए एक संदेश पढ़ा। यह सफेद ध्वज चारों गावों के लोगों के लिए भाईचारे का प्रतीक था, साल के एक बार सभी लोग यहां एकत्रित हों और नये वर्ष के उत्सव को उल्लास के साथ मनायें।

यह संदेश पढ़ने के बाद वे चारों युवा लड़के बहुत खुश हुए और प्रतिवर्ष वहां साथ-साथ आने लगे।

यहां पर कुछ उदाहरण देखते हैं-एक पर्वत, चार गांव, चार पथ जो एक ही लक्ष्य ध्वज की तरफ जाते है, रामपुरा का पथ पत्थरों का था जो ऊबड-खाबड था, भरतपुरा का पथ झाडियों से घिरा हुआ और वृक्षों से लदा हुआ था, लवपुरा का पथ ऊंचे वृक्षों वाला और सीधा था। तथा कुशपुरा का पथ ढलाननुमा था। ये सभी चारों पथ चोटी की और ध्वज की तरफ जाते थे। पथ (के प्रकार) अलग-अलग हो सकते हैं परंतु उनका उद्देश्य एक समान था।

भगवद्गीता में भी जीवन के बंधन से मुक्ति के उद्देश्य के लिए चार अलग-अलग पथ बताये गये हैं। चार पथ है-

- ज्ञान योग (ज्ञान का मार्ग)
- कर्म योग (कर्म का मार्ग)
- भक्तियोग (भक्ति का मार्ग)
- राजयोग (इच्छा शक्ति का मार्ग)

लक्ष्य की प्राप्ति हेतु अलग-अलग लोगों द्वारा इन चार मार्गों का अनुपालन किया जाता है। इन मार्गों के ( ) नीचे दिये गये हैं-

- ज्ञान योग - आदि शंकराचार्य
- कर्म योग - भगवान कृष्ण
- भक्ति योग - मीरा और भगवान हनुमान
- राजयोग - महर्षि पतंजलि

आप भी अपने जीवन में ऐसी ही समान परिस्थितियां देखते हैं। इस में से दो घटाने पर भी आठ ही बचता है और पांच में तीन जोडने पर भी आठ ही आता है। आप बैंगलोर से दिल्ली वायुयान से भी आ सकते हैं, ट्रेन से भी, बस से भी या फिर अपनी कार से भी। जिस भी तरीके (रास्ते) से आयेंगे, आपका उद्देश्य दिल्ली पहुँचना ही है। मार्ग भिन्न हो सकता है पर लक्ष्य एक ही है।

इसी तरह से कोई एक लक्ष्य है तो उसकी प्राप्ति के मार्ग भिन्न-भिन्न हो सकते हैं। हमारे देश की यह मूल संकल्पना है। सभी मार्ग यही हो सकते हैं। लोगों को अपने अनुसार मार्ग का चुनाव करना है।

इस पाठ में दिये गये श्लोकों में योग के चार मार्ग बताये गये है। आईये हम प्रथम ध्यान श्लोक के साथ-साथ 18 श्लोकों का अध्ययन करें।

8.2 श्लोक 1 से 15

1- Å ikFkk; çfrckfèkrk Hkxork ukjk;.ku Lo;
0;klu xfFkrk ijk.kefuuk eè; egkHkkjreA
v}rkeroE"k.kÈ Hkxorhe& v"Vkn'kkè;kf;uhe
vEc Rokeu lUnèkkfe Hkxon& xhr Hko}f"k.kheAA1AA

महर्षि व्यास द्वारा महाभारत महाकाव्य के बीच में लिखी गई भगवद्गीता की भगवान नारायण द्वारा अर्जुन को उपदेश रूप में कही गई है।

2- ; cãk o#.kUæ#æe#r% LrUofUr fn0;% Lro%
on% lk³xinØekifu"kn% xk;fUr ; lkexk%A
è;kukofLFkrrnxru eulk i';fUr ; ;kfxu%
;L;kUr u fon% ljklj.kk% nok; rLe ue%AA9AA

ब्रह्म, वरुण, इन्द्र, रुद्र तथा मरुत् गण दिव्य स्रोतों से जिनकी स्तुति करते हैं, सामवेद का उच्चारण करने वाले अंग, पद, ( ) और उपनिषद ग्रंथों सहित वेदों के द्वारा जिनका गुणगान करते हैं, योगीजन ध्यान चित्त मन से जिनका दर्शन करते हैं, देवता और असुर गण सभी जिनके अन्त को नहीं जानते हैं ऐसे उस देव (परमपुरुष नारायण रूप; को ( ) के लिए मेरा नमस्कार है।

3- olnolr no dlpk.kjenueA
nodhijekuUn d".k oUn txnx#eAA5AA3

वसुदेव के पुत्र, कंस ओर चाणुर राक्षसों का वध करने वाले, देवकी जिनकी माता हैं, संतोष प्रदान करने वाले है ऐसे भगवान कृष्ण को मैं नमस्कार करता हूँ जो जगत के गुरु अर्थात सभी लोगों के मान्य हैं।

4- ed djkfr okpky i³x y³?k;r fxfjeA
;Rd`ik reg oUns ijekuUnek/koeAA8AA4.

जिनकी कृपा से बोल नहीं पाने वाला व्यक्ति भी बोलने में समर्थ हो जाता है, जिसके पैर ठीक से काम नहीं करते ऐसा व्यक्ति भी पहाड़ पर चढ़ सकता है, सभी प्रकार के आन्नद के स्रोत ऐसे उस माधव अर्थात भगवान श्री कृष्ण को मैं नमस्कार करता हूँ।

5- ikjk'k;lop% lkjteey xhrkFkZxUèkkRdV
ukuk[;kudd lj gfjdFkk& lEckèkukckfèkreA
ykd lTtu"kVinjgjg% iih;eku enk
Hk;knHkkjri³dt dfyey& çèoflu% J; lAA7AA

vFkU lkejL;&'ykd l³xg%

विविधता में एकता पर श्लोक संग्रह

6- vudfpÙkfoHkkUrk ekg tky lekorkA
çlä% dkeHkkx"k irfUr ujd·'kpkAA16AA16AA

अज्ञान वश मोहित में रहने वाले, अनेक प्रकार से भ्रमित चित्तवृति वाले मोहमाया रूप जाल से समावृत और विषय भोगों में अत्याधिक आसक्त लोग अपवित्र नरक के भागी होते हैं अर्थात नरक में गिरते हैं।

7- Åèo xPNfUr lÙoLFkk eè; fr"BfUr jktlk%A
t?kU;x.kofÙkLFkk vèkk xPNfUr rkelk%AA14&18AA

जो सत्व प्रवृति (Mode of Goodness) के होते है वो आगे (ऊर्ध्व) जाते है,

राजसिक प्रवृति (mode of passian) के लोग मध्य में और तामसिक प्रवृति (mode of ignorance) के लोग नीचे जाते हैं। अर्थात सत्व प्रवृति के उत्तम ग्रह की तरफ (स्वर्ग), राजसिक प्रवृति के लोग धरालोक पर तथा तामसिक प्रवृति के लोग नरक की तरफ जाते हैं।

8- pr%oèkk HktUr ek tuk% lqdfruk·tZuA
vkrk ftKklqjFkkFkÊ Kkuh p Hkjr"kHkAA7&16AA

हे अर्जुन! चार प्रकार की विशेषताओं वाले लोग मुझे पूजते है, व्यक्ति, ज्ञान के साधक, धन के लोलुप तथा ज्ञानी व्यक्ति।

9- dk;su eulk c)\`;k doyfjfUæ;jfiA
;kfxu% de dqofUr l³\`x R;äokRe'k);AA5&11AA

योगी लोग आसक्ति का त्याग कर, शरीर से, मन से, बुद्धि से और इन्द्रियों से स्वयं की शुद्धि के लिए कर्म करते हैं।

10- mÙke% iq#"kLRoU;% ijekReR;qnkâr%A
;ks ykd=;ekfo'; fcHkR;O;; ÃÜoj%AA15&17AA

लेकिन सर्वोच्च पुरुष, अविनाशी ईश्वर जो कि तीनों लोकों में व्याप्त है, उनका बचाव (निर्वाह) करता है।

11- rLekPNkL=a çek.ka r dk;kdk;O;ofLFkrkA
KkRok 'kkL=foèkkukä de drqfegkgfl AA16&24AA

इसलिए शास्त्र को यह निर्धारित करने का अधिकार है कि क्या किया जाना

चाहिए और क्या नहीं किया जाना चाहिए। अर्थात् शास्त्र करणीय और अकरणीय को बताते है। शास्त्र में जो निर्देश किया गया है उसी रूप में इस लोक में व्यवहार किया जाना चाहिए।

12- len%[kl|[k% LoLFk% leyk"Vk'edk¥pu%A
r|Y;fç;kfç;k èkhj% r|Y;fuUnkRel|Lr|fr%AA14&24AA

सुख और दुख में, समभाव रहता है, जिसके लिए पत्थर और स्वर्ण एक समान है, जो मित्रता और अमित्रता में एक जैसा व्यवहार करता है तथा जो स्वयं प्रशंसा अथवा निंदा में एक जैसा रहता है, ऐसा ही व्यवहार करना चाहिए।

13- r|Y;fuUnkLr|freZkSuh lUr|"Vks ;su dsufpr~A
vfudsr% fLFkjefr% HkfäekUes fç;ks uj%AA12&19AA

हे अर्जुन जिसके लिए प्रशंसा और निंदा एक जैसी है। जो शांत भाव से रहता है और हमेशा संतुष्ट रहता है, स्थिर चित्त और भक्तिभाव में लीन है, वह उपासक मुझे प्रिय है।

14- l|[kn%[ks les d`Rok ykHkkykHkkS t;kt;kSA
rrks ;q)k; ;|T;Lo uSoa ikieokIL;flAA2&38AA

सुख और दुख में, लाभ और हानि में, जीत और हार समभाव रहने वाला और युद्ध के लिए युद्ध करने वाला न कि पाप के लिए।

15- vk'p;ZoRi';fr df'pnue vk'p;Zo}nfr rFkSo pkU;%A
vk'p;ZoPpSueU;% Ük.kksfr JqRokI;su on u pSo df'pr~AA2&29AA

कोई महापुरुष (सज्जन पुरुष) ही आत्मा को आश्चर्य की भांति देखता है ऐसा ही कोई अन्य महापुरुष इस आत्मा का तत्व की भांति वर्णन करता है तथा अन्य कोई अधिकारी महापुरुष ही इसे आश्चर्य की भांति सुनता है और कुछ तो सुनकर भी इसको नहीं समझते है।

8.3 श्लोक 16 से 24

16- ;a yCèok pkija ykHka eU;rs ukfèkda rr%A
;fLefULFkrks u nq%[ksu x#.kkfi fopkY;rsAA6&22AA

परमात्मा की प्राप्ति रूप लाभ को प्राप्त करके जो पुरुष किसी अन्य लाभ को नहीं मानता है तथा परमात्मा के प्राप्ति रूप अवस्था में स्थित योगी बहुत ही बडे दु:ख से भी चलायमान नहीं होता।

17- eqäl³xks·ugaoknh èkR;qRlkglefUor%A
fl)~;fl)~;ksfuZfodkj% drk lkfÙod mP;rsAA18&26AA

जो आसक्ति से रहित है, अहंकार को नहीं मानता है। दृढता और उत्साह से युक्त है, सफलता और असफलता में समभाव है वह सात्विक कहलाता है।

18- efPpÙkk enxrçk.kk cksèk;Ur% ijLije~A
dFk;Ur'p eka fuR;a rq";fUr p jefUr pAA10&9AA

जो अपने तन-मन से (मन और जीवन से) पूरी तरह मुझमें लीन रहते है तथा एक दूसरे को आत्मसात (ज्ञानयुक्त) करते हैं और हमेशा मेरा स्मरण करते है ऐसे लोग हमेशा सतुष्ट और प्रसन्न रहते हैं।

19- cgfu e 0;rhrkfu tUekfu ro pktZuA
rkU;ga on lokZf.k u Roa oRFk ijUriAA4&9AA

हे अर्जुन! मेरे बहुत से जन्म बीत चुके है और साथ ही साथ मैं उन सभी को जानता हूँ लेकिन तुम इसके बारे में कुछ भी नहीं जानते है।

20- ;L; ukgÁ-rks Hkkoks cqf) ;L; u fyI;rsA
gRokfi l bekYyksdku~ u gfUr u fucè;rsAA18&17AA

वह जो अहंकार की भावना से दूर रहता है, जिसकी बुद्धि मलिन नहीं होती है। मृत्यु होने पर भी वह इस लोक न मरता है न ही निबध होता है।

21- flf) çkIrks ;Fkk czã rFkkIuksfr fucks/k esA
lekluSo dkSUrs; fu"Bk KkuL; ;k ijkAA18&50AA

हे अर्जुन मुझसे संक्षिप्त में सुन। वह जिसके पूर्णता प्राप्त कर ब्रह्म को प्राप्त कर लिया है वही ज्ञान की सर्वोच्य स्थिति है।

22- ç;k.kdkys eulk·pysu HkDR;k ;qäks ;ksxcysu pSoA
Hkzqokseè;s çk.keos'; lE;d~ l ra ija iq#"keqiSfr fnO;eAA8&10AA

मृत्यु के समय, शांत मन के साथ भक्ति और शक्ति से युक्त योग की शक्ति से जीवन श्वास को संभाल कर देनों भौंहो के मध्य स्थित करता है वही उस देदीप्यमान परम पुरुष तक पहुँचता है।

23- reo 'kj.k xPN loHkkou HkkjrA
rRçlknkRijk 'kkfUr LFkku çkIL;fl 'kkÜoreAA18&6AA

हे अर्जुन! उस परम पुरुष की कृपा प्राप्त करके ही परम शांति और अनन्त वास की प्राप्ति की जा सकती है।

24- bfr JhenHkxonxhrklq mifu"kRlq cãfo|k;k ;kx'kkL=
Jhd".kktqulokn ek{kFk ;kxç.kkyhlkejL;'ykdl³xg%

यह भगवद् गीता में मोक्ष प्राप्ति हेतु ब्रह्म विद्या और योगशास्त्र के विषय में अर्जुन और भगवान श्रीकृष्ण का संवाद समरसश्लोक संग्रह के रूप में है।

पाठगत प्रश्न 8.1

1. किस प्रकार के लोग कृष्ण के उपासक है?
2. योगीजन अपने कार्यों को कैसे संचालित करते हैं।
3. चार मार्गों के अनुगमन करने वालों में से किसी एक का उदाहरण दीजिए।
4. किसने अनेक जन्म धारण किये है?

आपने क्या सीखा

- मार्ग की प्रकृति में अंतर हो सकता है परंतु सभी मार्गों का लक्ष्य एक ही है।
- जीवन में लक्ष्य की प्राप्ति, बंधन से मुक्ति के लिए चार पथ बताये गये है:

  – ज्ञान योग (ज्ञान का मार्ग)

  – कर्म योग (कर्म का मार्ग)

- भक्ति योग (भक्ति का मार्ग)
- राज योग (शक्ति का मार्ग)

- सभी पथ सही है। व्यक्ति को अपनी प्रकृति और क्षमतानुसार मार्ग का चयन करना चाहिए।

पाठांत प्रश्न

1. सात्विक कौन कहलाता है?
2. पर्वत के समीप वाले गांवों की कहानी से क्या शिक्षा मिलती है।
3. लोग आत्म में भेद कैसे मानते है?

उत्तरमाला

8.1

1. शांतचित्त, ज्ञानार्थी, सम्पन्नता और बुद्धियुक्त लोग
2. शरीर, मन, बुद्धि और ज्ञानेन्द्रियों से
3. i) ज्ञान योग - आदिशंकराचार्य

   ii) कर्म योग - श्रीकृष्ण

   iii) भक्ति योग - मीरा और हनुमान

   iv) राज योग - महर्षि पतंजलि
4. श्रीकृष्ण